वार्षिक 150/- रुपये | अप्रैल 2025 | वर्ष 27 | अंक 06 | पृष्ठ - 28 | मूल्य 15/-रु.

गोसम्पदा

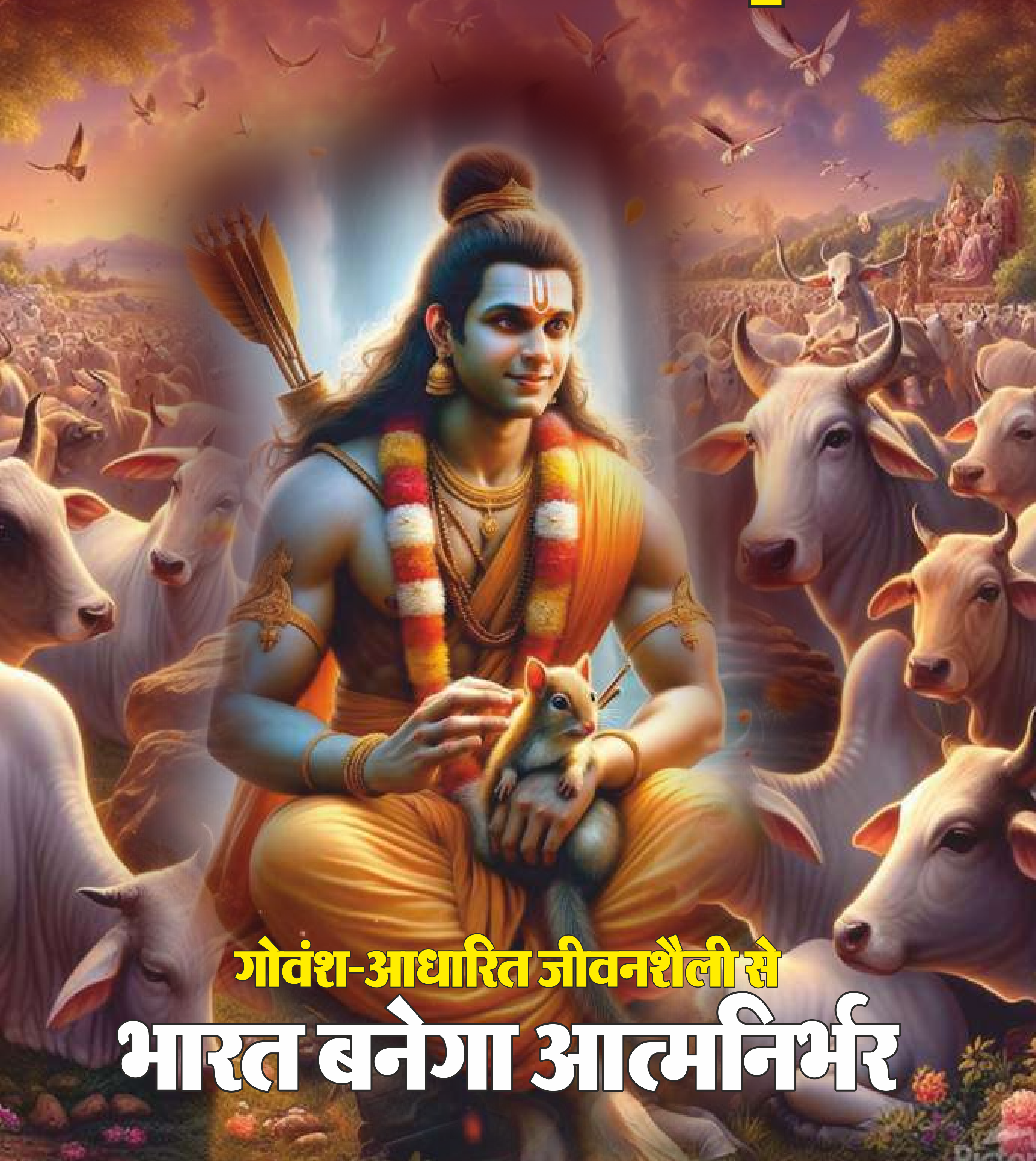

गोवंश-आधारित जीवनशैली से
भारत बनेगा आत्मनिर्भर

सम्पादकीय

गोवंश-आधारित जीवनशैली से भारत बनेगा आत्मनिर्भर

देश के सम्पूर्ण देशवासी भलीभांति इस सत्य से अवगत हैं कि जब भारत **"विश्वगुरू"** के पद से सुशोभित था तब इसका मूल आधार गोमाता–गोवंश ही था। उस समय गोधन ही सर्वश्रेष्ठ सम्पदा माना जाता था। गोधन यानी गोसम्पदा (पंचगव्य) के माध्यम से ही देश में चहुंओर सुख–शांति और समृद्धि स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती थी। लोगों का जीवन सहज–सरल तथा सुखमय था। वास्तव में लोगों के सुखमय जीवन का मूल स्रोत गोमाता–गोवंश ही था। उल्लेखनीय है कि सवदेवमयी गोमाता की कृपा से ही रघुवंश था, रामराज्य था और सर्वश्रेष्ठ गोपालक–गोरक्षक योगेश्वर श्री कृष्ण द्वारा संस्थापित धर्म राज्य भी था।

वस्तुतः आध्यात्मिक राष्ट्र भारत में आदिकाल से ही गोवंश आधारित जीवन पद्धति विद्यमान रही है। निर्विवादरूप से यह भी कहा–माना जाता है कि इस देश में "गोसंस्कृति" के अनुसार ही देशवासी जीवन–यापन करते थे। वर्तमान में गोसंस्कृति के संशोधित स्वरूप को ही "सनातन संस्कृति" या "भारतीय संस्कृति" कहा जाने लगा है। इस पृष्ठभूमि के आधार पर उस समय से ही गो सेवा–रक्षा–संवर्द्धन भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। इसी परिप्रेक्ष्य में कहा जाता है कि हमारे देश में दूध–दही की नदियां बहतीं थीं। इसीलिए प्रारंभ से ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ गोवंश को माना जाता है और अभी भी इस तथ्य को प्रमाणित किया जा सकता है। क्योंकि वास्तव में गोवंश–आधारित खेती और लघु–कुटीर उद्योग–धंधों के आधार पर प्रायः सभी गांवों में ग्रामवासी सुख–शांति–समृद्धि के साथ जीवन–यापन करते रहे हैं।

पूर्णतः स्पष्ट है कि गोवंश (गोधन) को सबसे बड़ी सम्पदा (गोसम्पदा) माना जाता था। गोवंश–संख्या बल पर ही ग्रामवासियों का मान–सम्मान होता था। उनको विभिन्न उपाधियों से विभुषित–सम्मानित किया जाता था, जिसे सभी लोग भलीभांति जानते हैं। स्मरण रहे आध्यात्मिक–धार्मिक दृष्टि से, आर्थिक पक्ष से पर्यावरण संतुलन और मानव स्वास्थ्य रक्षण के पहलू से तथा सामाजिक समरसता बनाए रखने में गोवंश का अप्रतिम योगदान रहा है। इसीलिए मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत तक किये जाने वाले सभी सोलह संस्कारों सहित अन्य सभी धार्मिक अनुष्ठानों में गोमाता–गोवंश अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ था और अभी भी किसी–न–किसी रूप में जुड़ा हुआ है। सभी प्रकार के संस्कार–धार्मिक अनुष्ठान गोमाता–गोवंश के बिना सम्पन्न होना संभव ही नहीं। इसी कारण से गोमाता–गोवंश की हत्या को अक्षम्य–जघन्य अपराध माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार तो गोवंश–हत्या को महापाप घोषित किया गया है। यहां तक कि मानव–हत्या से भी बड़ा अपराध कहा–माना गया है। इस महापाप के प्रायश्चित का विधान भी स्पष्टरूप से हमारे शास्त्रों में उल्लेख किया गया है।

सच तो यह है कि गोमाता बिना किसी भेदभाव के सभी धर्मों, पंथों, सम्प्रदायों के लोगों को अपने अमृतरूपी दूध (सम्पूर्ण पौष्टिक भोजन) का पान कराकर अपने ही गोबर–गोमूत्र से आरोग्यता–सम्पन्नता भी प्रदान करती है। वास्तव में सम्पूर्ण मानव जाति के भरण–पोषण और मंगलकारी कल्याण में सर्वाधिक उपादेयता है गोमाता–गोवंश की। इन सब उपकारों के बाद भी यदि कोई मनुष्य गोवंश–हत्या और गोमांस–भक्षण का समर्थन या सहयोग करता है तो असंदिग्धरूप से वह गोद्रोही–राष्ट्रद्रोही है।

दुर्भाग्य से कहें या अज्ञानतावश अभी तक ऐसी गोमाता–गोवंश की हत्या तथा गोमांस–भक्षण को नहीं रोका जा सका है। साथ ही उसकी हर प्रकार से घोर उपेक्षा भी की जा रही है। दुष्परिणामस्वरूप आज सम्पूर्ण मानव समाज विकराल समस्याओं के मकड़जाल में फंसकर और असाध्य रोगों से ग्रसित होकर अतिशय कष्टदायी जीवन जीने को बाध्य है। अतः ऐसी विषम परिस्थिति में भारत को आत्मनिर्भर बनाने और मानव स्वास्थ्य को बचाने के लिये गोवंश–आधारित जीवनशैली अपनाना अपरिहार्य है, अन्य कोई विकल्प है ही नहीं। हालांकि अब केंद्र सरकार सहित अनेक राज्य सरकारों द्वारा गोवंश पालन–संरक्षण और संवर्धन के लिये अनेक योजनाएं प्रारंभ की गई हैं, जिनके माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था की सुदृढ़ नींव रखी जा सकती है। ध्यान रहे सुदृढ़ ग्रामीण अर्थव्यवस्था के आधार पर ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का **"आत्मनिर्भर भारत"** का स्वप्न साकार किया जा सकता है।

(सम्पादक)

गोसम्पदा

वर्ष – 27 अंक-06 अप्रैल – 2025 पृष्ठ – 28

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी

दिनेश उपाध्याय जी
अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक : देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–22
मो. : 8130049868 कार्या. 011–26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार-प्रसार प्रमुख : डॉ. नरेश शर्मा जी
9811111602

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672 कार्या. : 011–26174732

साज-सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना

'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि

एक प्रति : रु. 30/–
वार्षिक : रु. 150/–
आजीवन : रु. 1500/–

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सनातन संस्कृति का मूलाधार भारतीय गोवंश	04
गोमाता की आलोचना करने वालों को अध्ययन और शोध की आवश्यकता	07
गोमाता-गोवंश के अच्छे दिन कब आयेंगे ?	10
नित्य उपयोगी : पंचगव्य उत्पाद	13
गोमाता के सम्मान को पुनर्स्थापित करने के लिए शहरों में आवासीय कॉलोनी के पास गौशालाओं का निर्माण आवश्यक	15
स्वस्थ जीवन के लिए अपनाएं गोवंश आधारित जैविक खेती	19
गोशालाएं बनवाकर सरकार ने दुर्गंध फैलाई: अखिलेश	21
मां का दूध नहीं पीने वाले बच्चे मोटापे के शिकार	22
ईसाई संगठन अब देश में चलाएगा गोधन रक्षण एवं संरक्षण जैसी मुहिम	23
Urbanization and Cow Conservation Challenges of Traditional Livestock Management	24

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं–

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली
खाता नम्बर – 04072010038910
IFSC CODE : PUNB0040710

नोट : शुल्क **"भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद"** के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011–26174732

राजेन्द्र सिंहल

भारत का अंग्रेजों के आने से पहले विश्व व्यापार में लगभग 25 प्रतिषत हिस्सा था, आज नगण्य रह गया है। सनातन संस्कृति को आर्थिक रूप से मजबूत करने के लिये भारत को गोवंश आधारित अर्थ व्यवस्था–कृषि व्यवस्था को अपनाना होगा।

सनातन संस्कृति का मूलाधार भारतीय गोवंश

महाकुम्भ 2025 में 66 करोड़ से अधिक आस्थावान श्रद्धालुओं ने संगम स्नान किया। तब से विश्व के नीति नियन्ता योजनाकार, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ विस्मयभरी दृष्टि से इतने बडे आयोजन के विश्लेषण में लगे हुए हैं। आर्थिक दृष्टि से महज 7000 करोड़ रुपया महाकुंभ आयोजन पर उत्तर प्रदेश सरकार ने खर्च करके लगभग 3 लाख करोड़ रुपये का योगदान भारतीय अर्थ व्यवस्था के अंतर्गत अधिकांश उत्तर प्रदेश की अर्थ व्यवस्था में हुआ। रु.7000 करोड़ रुपये में से जो खर्चा उ.प्र. सरकार के प्रयागराज के आसपास आधारभूत सुविधाओं में खर्च किया गया है, उसका लाभ उसे आने वाले समय में मिलता रहेगा। महाकुंभ मेले से स्पष्ट होता है कि सनातन संस्कृति का सामाजिक व आध्यात्मिक दृष्टि से काफी उत्थान हुआ है ।

दूसरी तरफ समाचार आया कि रोजगार की तलाश में अवैध तरीके से गये हुए 300 से अधिक भारतीय नागरिकों को अमरिका ने हथकडी व पैरो में बेडियां डालकर भारत में डीपोर्ट कर दिया। रोजगार की तलाश में गये लगभ 10,000 भारतीय विश्व की जेलों में बन्द हैं। भारतीय गोवंश लगभग गत 200 वर्षो से सरकारी उपेक्षायों व गलत सरकारी नीति के शिकार हैं। मैं पचतन्त्र की एक कहानी लिखकर बाद में अवस्था का विश्लेषण करूगां। एक धनाड्य व्यापारी के यहां तीन पुत्र व पुत्र वधु थे उसने सोचा की मृत्यु के उपरान्त किसको को यह साम्राज्य सौंपा जाये। उसने तीनों पुत्र व पुत्र वधुओं की परीक्षा ली। तीनों दम्पतियों को एक–एक मुठ्ठी अनाज देकर उसने संवर्धन, पोषण व संरक्षित करने को कहा। पहले दम्पति ने सोचा कि इसका आटा बनाकर खा लेंगे, शरीर पौष्टिक हो जायेगा। सदुपयोग हो गया, वही किया। दूसरे दम्पति ने सोचा इसे तिजोरी में संरक्षित कर देते हैं। तीसरे दम्पति ने योजना बनाई कि

इससे खेत की बिजाई करते हैं। कालान्तर में फसल होगी जिसका उपयोग करेंगे। इस प्रकार तीन वर्षों तक उन्होंने परिश्रम पूर्वक कार्य किया। अन्न का भण्डार हो गया व अतिरिक्त अन्न भरण–पोषण के काम भी आता रहा।

तीन वर्ष उपरान्त धनाड्य व्यापारी ने तीनों पुत्रों व पुत्र वधुओं को बुलाया। अन्न के बारे में चर्चा की। तीनों ने अपना–अपना वृतान्त सुनाया। उसके उपरान्त व्यापारी ने तीसरे दम्पति को साम्राज्य सौंप दिया। भारतीय गोवंश के बारे में अंग्रेजी शासकों (व्यापारियों) को उसके महत्व का पता नहीं था, उन्होंने उसको कत्लखानों में भेजकर खाने का कार्य किया। भारत स्वतन्त्र हुआ–नीति नियन्ता राजनीतिज्ञ भारतीय गोवंश का महत्व नहीं समझ पाये। सन 1966 में बड़ा भारी गोरक्षा का आन्दोलन हुआ। अधिकतर राज्य सरकारों ने गोवंश–हत्या निषेध के आधे–अधूरे कानून बनाये व गोशालाओं ने गोवंश को संरक्षित करने का कार्य किया, परन्तु यह ऊंट के मुंह में जीरा साबित हुआ।

कालान्तर में भारतीय अर्थ व्यवस्था कमजोर होती गई। भारत का अंग्रेजों के आने से पहले विश्व व्यापार में लगभग 25 प्रतिशत हिस्सा था, आज नगण्य रह गया है। **सनातन संस्कृति को आर्थिक रूप से मजबूत करने के लिये भारत को गोवंश आधारित अर्थ व्यवस्था–कृषि व्यवस्था को अपनाना होगा।**

गोवंश पर भारी मात्रा में विनियोग करके शोध–अनुसंधान की महती आवश्यकता है। शोध व अनुसंधान के कुछ विषय निम्न हो सकते हैं :–

- गो दुग्ध, घृत, दही, छाछ (पंचगव्य) किस प्रकार मानव की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।
- क्या विशेष गाय का दुग्ध पुरुष व स्त्री में बांझपन खत्म करता है।
- क्या पंचगव्य कैंसर, मानसिक रोग, अवसाद, मधुमेह (डायबिटीज) व अन्य बीमारियों में उपयोगी है।
- क्या बैल को कृषि, स्थानीय परिवहन घरेलू उद्योग जैसे तेल घानी, गुड़ निर्माण आदि में प्रयोग करके प्रदूषण कम किया जा सकता है और क्या रोजगार बढ़ाया जा सकता है?
- परम्परागत ऊर्जा में बैल शक्ति का किस प्रकार प्रयोग हो सकता है?
- क्या बैल चालित आधुनिक कृषि व अन्य घरेलू उद्योगों के लिए उपयोगी यन्त्र बनाये जा सकते हैं?
- क्या हिमकृत पाश्चरीत से दुग्ध के वास्तविक गुण खत्म हो जाते हैं, क्या ऐसा दुग्ध पात्र (बर्तन) का निर्माण किया जा सकता है जिसमें 6 घण्टे दुग्ध का मूल गुण धर्म बदले बिना दुग्ध सुरक्षित रहे, क्योंकि गांवों में 6 घण्टों में 200 से 250 किलोमीटर की परिधि में दुग्ध सीधा उपभोक्ता को पंहुचाया जा सकता है। इससे गोपालक की आमदनी बढेगी व उपभोक्ता को सही दुग्ध मिलेगा।
- गोवंश का मूत्र व गोबर कृषि उत्पादन में किस प्रकार वृद्धि कर सकता है।
- गोबर व मूत्र रासायनिक खादों व जहरीले कीटनाशकों से कैसे मुक्ति दिला सकता है?
- गोवंश आधारित कृषि से एक एकड़ में कृषक बहुउद्देशीय बहु फसली कृषि करके किस प्रकार 50,000रु. से ज्यादा प्रति माह आमदनी कर सकता है।
- क्या सीधे कृषक व शहरी उपभोक्ता समूह सहायता ग्रुप बनाकर सीधे किसानों से उपभोक्ता तक कृषि उत्पाद पहुंचाये जा सकते हैं।
- प्राकृतिक रूप से मृत गोवंश का चमड़ा किस प्रकार मुलायम रखा जा सकता है। प्राकृतिक रूप से मृत गोवंश का अधिकतम आय के लिये किस प्रकार उपयोग किया जा सकता है? क्या जीवित गोवंश को कत्ल करने की अपेक्षा प्राकृतिक रूप से मृत गोवंश से ज्यादा लाभ प्राप्त किया जा सकता है? मुलायम चमड़े के लिये जीवित गोवंश को निर्दयता पूर्वक मारा जाता है।
- क्या गोवंश को ग्रामीण अर्थ व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु बनाया जा सकता है? क्या गोवंश के द्वारा कृषक की आय बढ़ाई जा सकती है?
- क्या गोबर–'गोमूत्र से उत्पादित मसालों, चाय, सूखे मेवों व अनाजों को निर्यात करके मांस निर्यात से अधिक आय प्राप्त की जा सकती है?
- क्या गो घृत (पंचगव्य) का मानव दवाइयों में उपयोग करके भारी मात्रा में निर्यात किया जा सकता है?
- क्या भारतीय नस्ल गीर, कांकरेज, साहीवाल, हरियाणवी गौरव, राठी, अंगोल, पुंगनूर आदि के घृत का जियोटैग लेकर विश्व में 10,000 रु प्रति लीटर तक निर्यात किया जा सकता है?

बहुत से मित्र मानते हैं कि आज की परिस्थितियों में गोवंश को आधार मानकर भारतीय अर्थ व्यवस्था—कृषि व्यवस्था को संचालित नहीं किया जा सकता। उनसे मेरी विनम्र विनती है कि सन 1984 में जब भाजपा की दो लोकसभा सीट रह गईं तो भारतीयता के जानने वाले राजनीतिक मनीषियों ने भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के उत्थान का लक्ष्य लिया व सन 2019 में लोकसभा में भाजपा की 303 सीटें आईं व सहयोगियों समेत 353 सीटें आईं। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के उत्थान के कारण ही 500 वर्ष से संघर्ष व प्रतीक्षा का अन्त होकर भव्य—दिव्य राम मन्दिर का श्रीअयोध्या धाम में पुनः निर्माण हुआ। भगवान श्री रामलला दिव्य भव्य रूप में विराजित हुए। उसी प्रकार वर्तमान परस्थिति में ग्लोबिंग वार्मिंग, बेरोजगारी, गिरती मानव रोग प्रतिरोधक क्षमता, राष्ट्रीय आय का भारी मात्रा में असमान वितरण राष्ट्र व विश्व को भारी क्षति पहुंचा रहा है। इनमें बदलाव लाने की महती आवश्यकता है।

अन्त में भारत की प्रति वर्ष 350 लाख करोड़ रुपये की अर्थ व्यवस्था है, जिसमें केन्द्रीय सरकार व राज्य सरकारों का लगभग 100 लाख करोड़ रुपये का बजट है। बजट प्रावधानों के अन्तर्गत कम—से—कम लगभग 50000 हजार करोड़ रुपया गोवंश के शोध—अनुसंधान में प्रति वर्ष राज्य व केन्द्र सरकारों द्वारा व्यय किया जाये तो पांच वर्षों में आशातीत सफलता प्राप्त होगी व भारतीय अर्थ व्यवस्था में आश्चर्यजनक, विस्मय भरे परिणाम सामने आयेंगे। वर्तमान में केन्द्र सरकार ने 2024—25 के बजट में रुपये 2.87 लाख करोड़ की खाद सब्सिडी व रु. 1.75 लाख करोड़ की खाद (फर्टिलाइजर) सब्सिडी के लिये प्रावधान किया है

जिसका कोई लाभ गोवंश पालक, कृषक व गोवंश आधारित कृषि से प्राप्त अन्न, फल, सब्जी, उपयोग करने वाले उपभोक्ता को नहीं मिलता। साहस से आगे बढ़ने पर परमपिता परमात्मा शिव तथा मां जगदम्बा भवानी हमें संबल प्रदान कर यह कार्य हम सबसे अवश्य करायेंगे।

नवरात्र पर्व पर विशेष

ब्रह्मांडीय शक्तियों को संचित करने का विधान

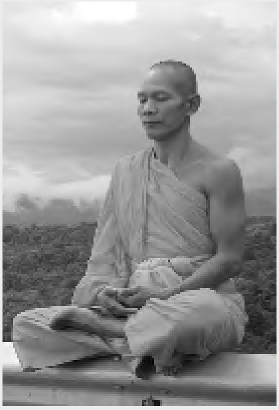

मानव जीवन दो प्रकार से संचालित होता है। प्रथम तो पांच तत्वों से निर्मित भौतिक जीवन है, जिसका उल्लेख गोस्वामी तुलसीदास जी ने **रामचरितमानस** में *'क्षिति जल पावक गगन समीरा, पंच रचित यह अधम सरीरा'* चौपाई में किया है। इसका अर्थ यह है कि मनुष्य जीवन के लिए इन पांच तत्वों की निहायत जरूरत होती है। मनुष्य पृथ्वी से आहार की वस्तुएं ग्रहण करता है, इसके बाद जल, पावक से ऊर्जा, गगन से शब्द तथा समीर से प्राणवायु लेता है, तब उसका जीवन संचालित होता है। वास्तव में देखा जाए तो इन पांच तत्वों का ऋण हर मनुष्य के ऊपर है। अतः इनकी समृद्धि के लिए हरेक मनुष्य का कर्तव्य है कि वह इन पांच तत्वों का उपभोग के साथ संरक्षण भी करे। मनुष्य चेतना शक्ति के रूप में भी जीवन जीता है। मन होने के कारण ही मानव को मनुष्य की उपाधि मिलती है, जो अन्य जीवों को नहीं मिलती। जो मन को सशक्त नहीं बनाते, वे चाणक्य—नीति के अनुसार संसार में बोझ बनकर रहते हैं और मनुष्य रूप में भी पशुओं की तरह जीते हैं। इसीलिए मन को मानुष बनाने के लिए ऋषि—मुनियों ने अनेकानेक उपाय बताए हैं जिनमें पूजा—पाठ, योग—व्यायाम, व्रत— उपवास तथा तीर्थाटन आदि शामिल हैं।

व्रत—उपवास के लिए **चैत्र नवरात्र** की अवधि उपयुक्त है। सामान्य रूप से ऋतु परिवर्तन के समय चैत्र नवरात्र में व्रत—उपवास के जरिये ब्रह्मांड में व्याप्त शक्तियों को संचित करने का विधान किया गया है। इस दौरान चेतना शक्ति, बुद्धि, निद्रा, शांति, कांति, लक्ष्मी, स्मृति तथा मातृ शक्ति आदि अनेकानेक शक्तियों की कृपा की कामना की जाती है। इन्हें प्राप्त कर मनुष्य आत्मा एवं मन की शक्ति से परिपूर्ण होता है। मन यदि कमजोर होता है तो भौतिक शक्तियां व्यर्थ लगती हैं। अतः नवरात्र पर्व पर पूरे विधि—विधान से प्रकृति रूपी दुर्गा से शक्ति अर्जित करने का प्रयास अवश्य करना चाहिए।

सलिल पांडेय

पूजा पाराशर (स्वतंत्र लेखिका)

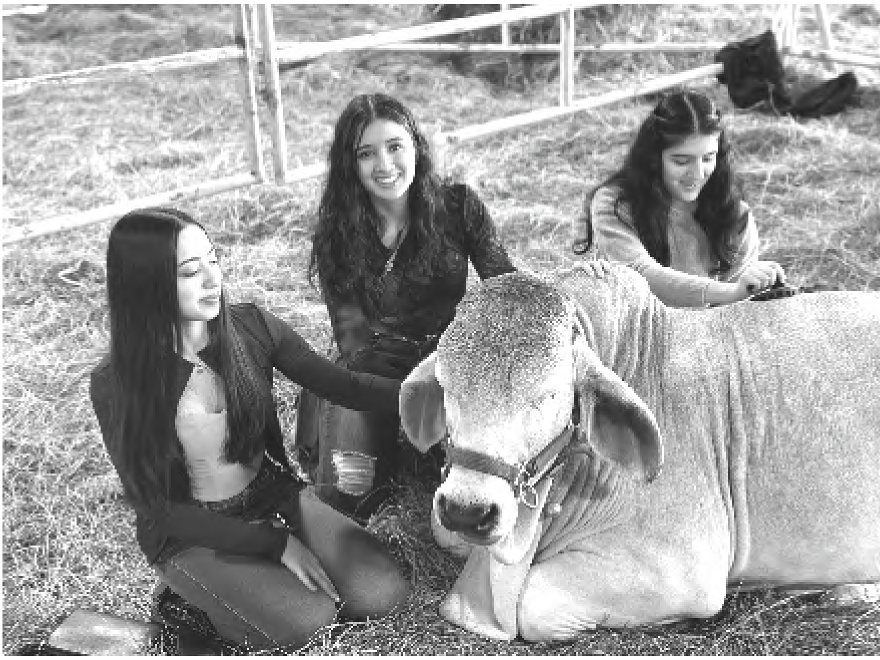

गोमाता की आलोचना करने वालों को अध्ययन और शोध की आवश्यकता

माता मोरी गैया,
गंगा भूमि मैया।
जन्मदात्री पहली मैया,
दूजी दूध पिलाती
तीजी ने सींचा जीवन को,
चौथी भार उठाती
इस जीवन की तू खैवेया,
ऋणी सदा मैं मैया
माता मोरी गैया, गंगा भूमि मैया।।

'माँ' नौ महीने अपने गर्भ में हमारा पोषण करती है और जन्म के पश्चात् मातृभूमि जीवन–भर हमारे भार को ढोती है, अतः माता और मातृभूमि के प्रति सदा कृतज्ञता ज्ञापित करना हमारा कर्तव्य ही नहीं धर्म भी है। इस पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य को अपने कुल, परंपरा की रक्षा करना और उसका पालन एवं कर्तव्यों का निर्वहन करना, उसका धर्म है। उसके इस मौलिक अधिकार पर किसी का अधिकार नहीं कि उसे उसके कर्तव्यों को पालन करने से बाधित कर सके। वह व्यक्ति साधारण हो या किसी भी ऊँचे पद को धारण करता हो, वह अपने पूर्वजों के बनाए नियमों या उनके बताए मार्गों का अनुसरण करने के लिए पूर्णरूपेण स्वतंत्र है।

आज सबसे बड़ी विडंबना यह है कि हमारा स्वभाव बनता जा रहा है कि हम स्वयं क्या कर रहे हैं, उस पर ध्यान देने के अपेक्षा दूसरा व्यक्ति क्या कर रहा है उस पर ध्यान अधिक केंद्रित करते हैं। मात्र इतना ही नहीं, सदा अपने आप को सही और दूसरे को गलत साबित करने का प्रयास करते रहते हैं, यही अज्ञानता की सबसे बड़ी पहचान है।

हाल ही में एक ऐसा विवाद सामने आया, जिसके न हाथ हैं न पैर...। तमिलनाडु में पोंगल (मकर संक्रांति) त्यौहार के बाद माट्टु (गोवंश) पोंगल त्यौहार मनाया जाता है। इस त्यौहार पर चेन्नई के वेस्ट मांबलम् स्थित गौशाला के एक समारोह में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) मद्रास के निदेशक वी. कामकोटि जी को आमंत्रित किया गया। समारोह में उन्होंने गायों, गौशालाओं और उनके संरक्षण की बात करते हुए केंद्र सरकार की योजनाओं और लाभों के बारे में बताया। साथ ही उन्होंने कहा, "गोमूत्र एंटी–बैक्टीरियल, एंटीफंगल है और पाचन संबंधी समस्याओं, चिड़चिड़ा आंत्र सिंड्रोम और ऐसी कई समस्याओं

का इलाज है। यह एक बहुत बड़ी दवा है।" तमिल भाषा में कामकोटि जी ने गोमूत्र के असाधारण गुणों और औषधीय लाभों की चर्चा करते हुए एक संन्यासी की कहानी भी साझा की – "एक प्रमुख संन्यासी आए और उन्हें बुखार हो गया। लोगों ने डॉक्टर को बुलाने का सुझाव दिया, लेकिन उन्होंने तुरंत कहा – 'गोमूत्र पिबामि' (वे गोमूत्र पीएंगे)। लोग गोशाला गए और उनके लिए गोमूत्र लाए। उन्होंने उसे पीया और 15 मिनट में बुखार गायब हो गया।" बस यह बात कुछ लोगों को पची नहीं और विवाद खड़ा कर दिया कि "आईआईटी मद्रास के निदेशक द्वारा छद्म विज्ञान का प्रचार करना /IMAIndiaOrg के लिए सबसे अनुचित है।" उनकी टिप्पणी की निंदा करते हुए "अवैज्ञानिक" विवरणों का समर्थन करने के लिए माफी माँगने की बात कही। इतना ही नहीं उनके विरुद्ध विरोध प्रदर्शन करने की धमकी भी दी। एक वरिष्ठ संकाय सदस्य ने कहा, "बतौर डायरेक्टर उनका नज़रिया काफी इनोवेटिव और प्रोफेशनल रहा है, लेकिन यह टिप्पणी करना अत्यधिक गैर–जिम्मेदाराना था। मुझे यकीन नहीं है कि उन्हें ऐसा कहने के लिए क्या प्रेरित किया गया।"

कामकोटि जी ने आखिर ऐसी कौन सी बात कह दी, जो विरोध प्रदर्शन लायक या गैर जिम्मेदाराना थी? इतना ही नहीं आलोचना करते हुए उनके स्थानांतरण की माँग की गयी और कहा गया "उन्हें (बाहर) स्थानांतरित कर दिया जाना चाहिए और भारत सरकार के किसी मेडिकल कॉलेज में तैनात किया जाना चाहिए... वे आईआईटी में क्या करेंगे? सरकार को उन्हें बाहर निकाल देना चाहिए... उन्हें किसी एम्स का निदेशक नियुक्त करना चाहिए।"

एक ऐसे प्रतिष्ठित, जिम्मेदार व्यक्ति जिन्होंने अपने जीवन को शिक्षा के लिए समर्पित किया, आज मात्र गोमाता के गुणों का बखान क्या कर दिया जैसे कोई बड़ा अपराध कर दिया हो, जिसके लिए उन्हें इतना अपमानित होना पड़ा। किस व्यक्ति से प्रमाण की माँग करते हुए माफी माँगने की बात करते हैं, जो प्रामाणिकता के साथ ही अपना हर कदम आगे बढ़ाते हैं!

समाज के ये, वे लोग हैं जिन्होंने ठान लिया है कि वे हमारी भारतीय संस्कृति और संस्कारों के विरोध में खड़े रहेंगे और उसके ह्रास के लिए यथासंभव प्रयास करते रहेंगे। वहीं प्रोफेसर के कई शुभचिंतकों को यह बात रास नहीं आई और उन्होंने इस निरर्थक विवाद का प्रतिवाद करते हुए कहा, "आईआईटी–मद्रास के डायरेक्टर क्वांटम फिजिक्स के एक्सपर्ट हैं और शीर्ष सरकारी एजेंसियों के सदस्य भी रहे हैं। वे अपनी धार्मिक मान्यताओं और गायों के प्रति सम्मान में दृढ़ हैं, जो गलत नहीं है। उन्होंने किसी को भी गाय का मूत्र पीने के लिए मजबूर नहीं किया और केवल अपनी मान्यताओं को व्यक्त किया।"

प्रो. कामकोटि ने अपने बयान पर अडिग रहते हुए प्रमाण के रूप में पाँच शोध पत्रों को साझा किया। उन्होंने कहा, "गोमूत्र के एंटीफंगल, एंटी– बैक्टीरियल और एंटी– इंफ्लेमेटरी गुणों को वैज्ञानिक रूप से प्रदर्शित किया गया है। संयुक्त राज्य अमेरिका की टॉप मैगज़ीन ने वैज्ञानिक सबूत छापे हैं। यह ध्यान रखना भी ज़रूरी है कि मेरी टिप्पणियां ऑर्गेनिक फार्मिंग और देशी मवेशियों की नस्लों के संरक्षण की वकालत के संदर्भ में की गई थीं, जो कृषि और समग्र अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।" 'उन्होंने जून 2021 में साइंस जर्नल नेचर में पब्लिश लेख साझा किया। इसमें नेशनल डेयरी रिसर्च इंस्टीट्यूट के एनिमल बायोटेक्नोलॉजी सेंटर और सेल बायोलॉजी एंड प्रोटिओमिक्स लैब से जुड़े वैज्ञानिक ने 'गाय के मूत्र में पेप्टाइड प्रोफाइलिंग के परिणाम' प्रकाशित किए गए थे। वैज्ञानिक ने निष्कर्ष निकाला था – गाय के मूत्र में हजारों एन्डोजिनस पेप्टाइड्स की खोज के लिए सरल विधि बताई गई है। ये गोमूत्र से जुड़ी अलग–अलग बायोएक्टिविटी में योगदान करते हैं।'

'आईआईटी मद्रास के सूत्रों के अनुसार, कामकोटि ऑर्गेनिक किसान होने के कारण चेन्नई और उसके आसपास की कुछ गौशालाओं से जुड़े हुए हैं।' अतः माट्टु पोंगल जो कि एक पारंपरिक उत्सव है, उन्हें आमंत्रित किया गया जहाँ उन्होंने ऑर्गेनिक फार्मिंग के बारे में विस्तार से बताया।'

जब उनसे यह पूछा गया कि क्या वह पंचगव्य खाते हैं। उन्होंने कहा, "हमारे त्यौहारों के दौरान, हम पंचगव्य खाते हैं। यह हमारे रीति–

रिवाजों में है। मैं पंचगव्य खाता हूँ।" आज पूरी दुनिया गोमाता के गुणों और उसकी विशेषताओं को मानते हुए, हर प्रकार से लाभान्वित होने का प्रयास कर रही है। "यूरोप, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में **'काऊ थैरेपी'** का एक चलन शुरू हो गया है। नीदरलैंड के लोग मानसिक शांति व तनाव दूर करने के लिए एनिमल फार्म हाउस जाते हैं। इसे **'काऊ नफलिन'** कहा गया है, जिसका अर्थ है 'गायों को गले लगाना'।" (विस्तार से समझने हेतु **गोसम्पदा,** अप्रैल 2024, पृ.8 पढ़ें)। "विश्व का सबसे शक्तिशाली विकसित माने जाने वाला देश अमेरिका गो एवं गोमूत्र के महत्व को समझता है इसलिए उसने गोमूत्र पर 6 पेटेंट ले लिए हैं। प्रतिवर्ष वह भारत से गोमूत्र आयात करता है। इसका प्रयोग सबसे अधिक कैंसर की दवा बनाने के लिए किया जाता है। काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च (सीएसआईआर) के अनुसार "एक आविष्कार में, गोमूत्र आसुत का उपयोग सीधे कैंसर रोधी चिकित्सा के लिए या कैंसर रोधी अणुओं के साथ संयोजन में जैव उपलब्धता सुविधाकर्ता के रूप में किया जाता है...।" (विस्तार से समझने हेतु **गोसम्पदा**, जनवरी 2024, पृ.6 पढ़ें)

प्रमाण माँगने वालों को थोड़े अध्ययन और शोध की आवश्यकता है। ऐसी बात करने वाले लोग संकीर्ण विचारों के होते हैं और हवा में बात करते हैं। समाज के ऐसे अज्ञानी लोगों के समक्ष हमें कोई भी प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं। जागरूक होने की बहुत आवश्यकता, अब उन्हें है! प्रमाण के लिए किसी को किसी से पूछने या कहीं जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। कृपया आधुनिक तकनीक का प्रयोग करें! हर समय अपने हाथ में लिए उस ज्ञान की पोथी को थोड़ा टटोलें, प्रमाण अवश्य मिल जाएँगे!

देश आगे बढ़ रहा है;
ध्वज भारत का,
शीर्ष पर लहरा रहा है;
दुनिया अभिवादन कर रही है;
अरे! सोए हुए देश के लोगो,
जागो! जागो!! जागो!!!

हरीशंकर दीक्षित 'पथिक'

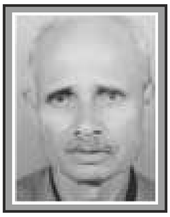

गोमाता-गोवंश के अच्छे दिन कब आयेंगे?

हमारे लोकमंगलकारी सर्वदेवमय गोवंश के दुख से दुखी धरती त्राहिमाम कर रही है। कृषकों–गोपालकों द्वारा इसकी उपेक्षा–तिरस्कार के कारण हमारी धरती माता की उर्वरा शक्ति में अनवरत ह्रास होता जा रहा है। दशा यहाँ तक दूषित हो गयी है कि प्रत्येक अगले चक्र में रासायनिक खादों की मात्रा दस–पन्द्रह प्रतिशत बढ़ानी पड़ रही है, अन्यथा उत्पादन में भारी कमी हो जाती है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो हम निकट भविष्य में धरती माता को बाँझ बनाकर अपनी भावी सन्तानों को भूखा प्यासा मरने की दशा में पहुँचाकर ही मानेंगे।

विडम्बना ही तो है जिनके पूर्वजों ने सृष्टि रचना के ईश्वरीय हेतु को जान–समझकर संसार को सृष्टि में मनुष्य की रचना के ईश्वरीय उद्देश्य से अवगत कराया। मानव कर्तव्यों (धर्म) का निर्धारण कर संसार को जीवनयापन की उचित विधि बतायी और आज उन्हीं पूर्वजों की सन्तानें हम लोग अपने ही पूर्वजों द्वारा निर्धारित कर्तव्यों से विमुख होते जा रहे हैं। **''अनावश्यक उपभोग दूसरों के भाग का अपहरण है''** इस उपदेश का आज कितने लोग पालन करते

हमारे गोवंश का दूध ही नहीं गोमय और मूत्र तक स्वर्णयुक्त होने के कारण उसमें अनेक अमृततुल्य औषधीय गुण होते हैं जो हमारे स्वास्थ्य और धरती की उर्वरता को बनाये रखने में महत्वपूर्ण हैं। विदेशी गायों में उपयुक्त गुणों के स्थान पर अनेक अवगुण हैं जो उनके दुग्ध, गोमय और मूत्र को मानव स्वास्थ्य के लिये हानिकारक बनाते हैं।

हैं? सत्य तो यह है कि आज ऐसे लोग विरले ही होंगे जो खोजने पर शायद ही मिल पायें। नगरों से गाँवों तक सभी स्थानों के लोग गोवंश के दुख से भलीभाँति परिचित हैं। यथार्थ तो यह है कि गोवंश के दुःख के मूल कारण हम स्वयं ही हैं। हमने अपने पूर्वजों के उपदेशों को विस्मृत ही नहीं किया अपितु उन्हें नकार तक दिया है। गोमय–मूत्र से आज हमें घिन आती है। घिन आने का एक कारण गोमय (गोबर) का दुर्गन्धयुक्त होना है। यह दशा गोवंश की उपेक्षा तिरस्कार के कारण अखाद्य कूड़ा–कचरा खाने

के कारण है। इसमें दोष तो हमारा ही है। हमने ही उसे अपने घर–परिवार से खदेड़ दिया है। 1960 में हरित क्रान्ति और फिर श्वेत क्रान्ति ने गोवंश पर भीषण कुठाराघात हमारे द्वारा ही कराया है।

हरित क्रान्ति ने ट्रैक्टर और रासायनिक खादों द्वारा और श्वेत क्रान्ति ने विदेशी गायों–सांड़ों का आयात कर गोवंश की उपयोगिता ही नहीं नष्ट की अपितु इनकी प्राकृतिक गुणवत्ता और पवित्रता तक नष्ट करने का कार्य किया है जो धरती की शिव–सुन्दर जैविक सृष्टि के लिए अति घातक सिद्ध होता जा रहा है। कृषि कार्यों में मशीनों के उपयोग से मनुष्य का समय और परिश्रम लगभग नब्बे प्रतिशत तक कम लगता है किन्तु प्रदूषण जो कि कृषि क्षेत्र में पहले नहीं था; मशीनों के उपयोग के अनुपात में बढ़ता जा रहा है। विदेशी सांड़ों द्वारा नस्ल सुधार करने के नाम पर हमारे गोवंश की गुणवत्ता और पवित्रता दोनों ही नष्ट होती जा रही हैं। हमारे गोवंश का दूध ही नहीं गोमय और मूत्र तक स्वर्णयुक्त होने के कारण उसमें अनेक अमृततुल्य औषधीय गुण होते हैं जो हमारे स्वास्थ्य और धरती की उर्वरता को बनाये रखने में महत्वपूर्ण हैं। विदेशी गायों में उपयुक्त गुणों के स्थान पर अनेक अवगुण हैं जो उनके दुग्ध, गोमय और मूत्र को मानव स्वास्थ्य के लिये हानिकारक बनाते हैं।

आधुनिक गुणसूत्र विज्ञान के अनुसार पशुओं के डी.एन.ए. की जांच करने पर गुणसूत्रों की पहचान होती है। हमारे देशज गोवंश का वैज्ञानिक गुण सूत्र ए2ए2 है। विदेशी गोवंश का गुण सूत्र ए1ए1 है। भारत सरकार की शोधशालाओं

में किये गये शोधों के अनुसार भारतीय गोवंश की 98 प्रतिशत नस्लें ए2 गुण सूत्र वाली हैं। ए2 गुण सूत्र की नस्लों का दुग्ध सर्वथा उत्तम होता है और ए1 गुणसूत्र वाले गोवंश के दूध में विषैला प्रोटीन होता है जो मानव स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। जिन दो प्रतिशत गोवंश में ए1 नामक विषैला प्रोटीन मिला है वह नस्ल सुधार के नाम पर विदेशी सांड़ों द्वारा संकरण के कारण हो सकता है।

हरियाणा में करनाल के नेशनल ब्यूरो ऑफ एनिमल जेनेटिक रिसॉर्सेज नामक संस्थान ने गहन अध्ययन–शोधकर पाया है कि भारतीय गायों में प्रचुर मात्रा में ए2 (एलीलजीन) पाया जाता है जो स्वास्थ्यवर्धक अमृत तुल्य दुग्ध उत्पन्न होने में महत्वपूर्ण भूमिका उत्पन्न करता है। इस जीन की उपस्थिति हमारे गोवंश में प्रचुर मात्रा में पायी जाती है, वहीं विदेशी गायों में बीटा कैसीन ए1 नामक प्रोटीन पाया जाता है जो इस्चीमिथा (हृदय रोग), मधुमेह, मानसिक, विकलांगता, स्नायुकोषों का क्षरण, अज्ञात कारण से बच्चों की आकस्मिक मृत्यु जैसे रोगों की उत्पत्ति का कारण है। उपरोक्त जानकारी मथुरा के पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. देवेन्द्र कुमार सदाना ने दी है जो **''गोलोक की ओर''** ग्रन्थ 2020 ई. में पृष्ठ 134 पर प्रकाशित है। इससे स्पष्ट है कि अनेक अन्य रोग भी विदेशी गायों के दूध, गोमय और मूत्र के कारण उत्पन्न होते होंगे।

यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है जब हमारे गोवंश में इतने गुण विद्यमान हैं तब भी हमने इसे उपेक्षित करते हुए तिरस्कृत क्यों कर दिया है? इसका उत्तर आज का अर्थशास्त्र है जो वस्तुतः अनर्थ–शास्त्र है। आधुनिक मशीनी आविष्कारों के पुरोधा देशों ने विश्व व्यापार संगठन बनाकर प्राकृतिक आधार पर निर्मित अर्थशास्त्र के

शिव सुन्दर स्वरूप को तीव्र आर्थिक विकास के नाम पर विकृत कर दिया है। हम उनके इस दुष्कृत्य को जान न सकें इसके लिए हमें अनावश्यक सुविधायें परोसकर ऐसा विलासी बना दिया गया है कि हम भ्रमित होकर बाजार के इंगित पर नाचते हुए अपनी भावी सन्तानों तक भाग धरती–प्रकृति को रक्त रंजित कर नोच खसोटकर स्वयं ही भोग रहे हैं। हमारी मूर्खता की पराकाष्ठा यह है कि हम उन्हीं भावी संतानों के लिए दूसरों के भाग का अपहरण कर धन–सम्पदा का संग्रह भी कर रहे हैं। मूर्खता के प्रदर्शन में हम कालिदास की मूर्खता को मात देते हुए उस पेड़ को ही समूल उखाड़ने में लगे हैं जिस पर हमारा भी बसेरा है।

जिन कारणों से हमने अपने मातृ–पितृवत गोवंश को उपेक्षित–तिरस्कृत कर स्वयं अपने अस्तित्व के साथ धरती की समस्त जैविक सृष्टि के अस्तित्व को संकट में डाल दिया है; उन पर गम्भीरतापूर्वक विचार करके दूर करना अब परमावश्यक है। इसके लिए हमारे सन्त समाज के साथ ही महन्तों और कथावाचकों को सृष्टि रचना में मनुष्य की भूमिका और कर्तव्यों का उपदेश गाँव–गाँव जाकर देना चाहिये। जब तक दण्डी सन्यासी ऐसे उपदेश गाँव–गाँव जाकर निःस्वार्थ भाव से देते थे तब तक हमारा गोवंश ही नहीं पशु–पक्षी तक सुखी थे। उन्हें कलरव करते देखकर हम अपने जीवन के अभाव भूलकर आनन्दमग्न हो जाते थे।

यदि हम अपनी भावी संतानों के लिये सुख–शान्तिमय जीवन जीने की परिस्थिति को निर्मित करना करना चाहते हैं तो हमें अपव्ययिता को त्यागकर मितव्ययिता को अपनाना होगा। विलासिता को त्यागकर कर्मठता को अपनाना होगा। ऐसा करने के लिए हमें अनावश्यक मशीनों का आश्रय त्यागना होगा। इसका प्रारम्भ हम मध्यम मार्ग अपनाते हुए कर सकते हैं। इसके अनुसार हम परम्परागत कृषि उपकरणों, यन्त्रों में आवश्यक सुधार करके बैल आधारित कृषि फिर से प्रारम्भ करें और ऐसा ही तेल–गुड़ उद्योगों में भी करें। यदि सरकार परम्परागत प्राचीन यन्त्रों में वांछित सुधार करने हेतु तकनीशियनों को प्रोत्साहित कर उन्नत यन्त्र कृषक–उद्यमियों को उचित छूट देकर उपलब्ध कराये तो सफलता शत–प्रतिशत मिलने की सम्भावना है।

इस प्रकार जब हमारा गोवंश हमारे घर–परिवार में फिर से प्रतिष्ठित होगा तब न तो सरकारी या निजी गोआश्रय स्थलों की आवश्यकता होगी और न ही छुट्टा गोवंश से कृषकों को समस्या होगी। हमारे घर के दालान में गोमाता और बछड़ों की कर्णप्रिय मधुर ध्वनि गूँजने से, उनकी स्वास–प्रच्छ्वास से वायु में पनपने वाले विषाणु नष्ट हो जायेंगे। घरों में गोवंश की उपस्थिति से हमारी प्रिय गौरैय्या फिर से हमारे घरों में घोंसले बनायेगी, उसे फुदकते हुए चीं–चीं करते देख हमारे घर के बालक आनन्द विभोर होकर स्वस्थ प्रसन्न रहेंगे।।

हम जानते हैं कि गोवंश हमारे लिए अति महत्वपूर्ण है, किन्तु विलासिता के जाल में फँसे हम लोग चाहकर भी गोवंश को अपने घर में स्थान नहीं देना चाहते। अनेक लोग चाहते हुए भी गोमाता को नहीं पाल पाते हैं। उनके सामने समस्या बछड़ों की है। उन्हें छुट्टा छोड़ने का पाप कोई गोभक्त कैसे कर सकता है। यदि बैल आधारित कृषि का चलन हो जाय तो गोवंश की समस्या का पूर्ण समाधान हो सकता है। यहाँ तक कि तब बैलों से कृषि इतनी लाभकारी होगी कि किसान बछड़ा उत्पन्न होने पर फिर से घण्टा–घडियाल बजाकर प्रसन्नता से उसका स्वागत करेंगे। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह दिन शीघ्रातिशीघ्र आये, जिससे हमारे गोवंश के अच्छे दिन प्रारम्भ हो सकें।

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी. आयुर्वेद)

नित्य उपयोगी : पंचगव्य उत्पाद

सुबह उठने से रात्रि सोने तक हम जो क्रियाएं करते हैं उन्हें दिनचर्या कहते हैं। भारतीय संस्कृति में सूर्योदय का अत्यंत महत्त्व है। दिन के अलग–अलग समय में हमें कब क्या करना हमारे लिए उत्तम है, यह हमें हमारे ऋषि–मुनियों ने बताकर रखा है। इस दिनक्रम को उन्होंने **''पिण्ड–ब्रह्माण्ड''** में एक दूसरे का जो संबंध–प्रभाव होता है, उस आधार पर बताया गया है। **''गाय हमारी माता है'' ऐसा हम कहते तो हैं लेकिन मानते हैं क्या?** उसके लिए अपनी कृति के द्वारा हम क्या क्या करते हैं? कर सकते हैं? हमारे घरों में दैनिक जीवन के लिए पंचगव्य द्वारा बनाई गई कितनी वस्तुएँ नित्य उपयोग में हैं?

सुबह उठते ही हमें मलत्याग करने की आवश्यकता लगना, यह सबसे पहला कर्म होना चाहिए। किसी–किसी को मलवेग उत्पन्न करना पड़ता है जिसके लिए जलसेवन, चाय, चूर्ण, गोली आदि का भी सहारा लिया जाता है। ''मलवेग'' अपने आप आना सबसे अच्छा होता है, लेकिन अगर न हो तो आयुर्वेदिक वैद्य की निगरानी में कामधेनु हरडे चूर्ण, हिंग्वाद्य घृत, पंचतिक्त घृत आदि का सेवन लाभदायक हो सकता है। सोते समय देशी स्वस्थ गाय से प्राप्त गरम दूध में थोड़ी सी सोंठ एवम् 1–2 चम्मच गाय का ही घी डालकर सेवन करने से लाभ होता है।

दूसरा हमारा नित्य कर्म है दंतधावन। वर्तमान समय में दांत, मसूढ़े, जिव्हा, गाल, गला, आदि का कैन्सर अनेक लोगों में दिखाई दे रहा है। कामधेनु गोमयभस्म दंतमंजन हमें अनेक रोगों से बचाता है। रोग कोई भी हो, एक बार आया तो जाएगा या नहीं कोई बता नहीं सकता। लेकिन आने से रोकने हेतु अनेक उपाय हैं, जिसमें गाय के गोबर के कंडे के कोयले से बने दंतमंजन का अत्यंत उपयोग होता है। चुटकी भर लो संपूर्ण मुँह में घुमाओ, मसूड़ों के ऊपर लगाएं और दो से पांच मिनट रहने दें। बाद में कुल्ला करें। कितने ही रुग्ण मुँह के कर्करोग (कैंसर) से ग्रस्त ऐसे देखे जा रहे हैं जिनका अब ऑपरेशन भी नहीं कर सकते। अतः बीमारी होने के पूर्व ही ध्यान देने की आवश्यकता है। पेस्ट में उपस्थित रासायनिक द्रव्य हमारी त्वचा से शरीर के अंदर प्रवेश कर वहाँ रासायनिक जहर का दुष्परिणाम दिखाते हैं। पंचगव्य के उत्पाद हमें इस अवस्था तक पहुँचने से बचाते हैं। कामधेनु गोमूत्र अर्क का पानी मिलाकर कुल्ला करना भी लाभ पहुँचाता है।

बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक लगभग सभी समय नित्य तैल अभ्यंग करना लाभदायक होता है। लेकिन तैल संपूर्ण शरीर में लगाने के लिए कौन–सा समय अच्छा है यह जानकारी हमें होनी चाहिए। सूर्योदय के पूर्व उठकर नित्य

अभ्यंग करना आरोग्य हेतु लाभदायक लगभग सभी के लिए है। सरसों तैल, तिल तैल, गोघृत, कामधेनु मालिश तैल, नारायण तैल, बला तैल आदि का उपयोग किया जा सकता है। आने वाली ऋतु में वात दोष का संचय काल है। शरीर में वातदोष का असंतुलन न होने के लिए नित्य तैल अभ्यंग एक सादा सरल उपाय है। ग्रीष्म ऋतु में शरीर में वात बढ़ने लगता है, तदुपरान्त वर्षा ऋतु में वात का प्रकोप होता है। अतः संचय होने से बचाते हैं तब प्रकोप ज्यादा होगा ही नहीं। यह अधिक उत्तम होगा।

भोजन में गोघृत का सेवन, गोतक्र का सेवन भी स्वास्थ्य वर्धक है। गोघृत वसंत ऋतु में सेवन नहीं करना है एवम् तक्र सेवन का निषेध आयुर्वेद में ग्रीष्म ऋतु में बताया गया है। अतः तक्र के रुक्ष तथा उष्ण गुण के कारण धूप काल में छाछ का सेवन नहीं करना ही लाभदायक है। कामधेनु एन्टी डैंड्रफ लोशन रीठा, शिकाकाई एवम् गोमूत्र से बना है। इसमें कपूर एवम् अज्वायन सत् भी पड़ा है। अतः रूसी के लिए जो इन्फेक्शन होता है उसे कामधेनु एन्टीडैन्ड्रफ लोशन खत्म करता है। इसलिए इसका नित्य उपयोग चिकित्सक के परामर्श से किया तो अधिक लाभ हो सकता है।

कामधेनु केश तैल में प्रचुर मात्रा में देसी गाय का दूध पड़ता है। साथ में आंवला एवम् वटजटा मुख्य रूप से बाल मजबूत बनाते हैं, एवम् लंबे भी। बालों में नित्य तैल लगा रहना भी वात को कम करता है। नहाने के लिए कामधेनु गोमयादी लेप टिकिया एवम् कामधेनु उबटन का उपयोग नित्य करना त्वचा के लिए अत्यंत लाभदायक है। त्वचा मुलायम रहती है, साथ ही वर्ण में निखार आता है। कामधेनु उबटन गाय का दूध, गुलाब जल या पानी में एकत्रित कर चेहरे पर लेप भी लगाने से लाभ दिखता है। लगाने के लगभग आधे घंटे बाद कुनकुने पानी से हल्के हाथ से साफ कर लेवें।

कामधेनु चंदन धूप, सादा धूप, मच्छर अगरबत्ती आदि धूपबत्ती का नित्य उपयोग हमारे घर के वातावरण को शुद्ध करता है और निर्जंतुक करता है। हमारे लिए हानिकारक जीव जहाँ गोबर जल रहा है वहाँ से दूर भागते हैं। अतः एक–दो धूपबत्ती के माध्यम से घर में रहने वाले सभी लोग सुरक्षित हो सकते हैं। घर अगर बड़ा है तब निश्चित ही धूपबत्ती भी हमें अधिक लगानी पड़ेगी।

शतधौत घृत तो ग्रीष्म कालीन ऊष्मा को शीतलता प्रदान करता है। इसे लगाते ही ठंडक का अनुभव होता है। इसका ग्रीष्म काल में पादाभ्यंग (तलुवों की मालिश) लगभग सभी को लाभ पहुँचा सकता है। गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, देवलापार के सभी उत्पाद अब "on Line" www. govigyanshop .com इस वेबसाईट से भी प्राप्त हो सकते हैं। चिकित्सकों के मार्गदर्शन में उपयोग करने से लाभ द्विगुणित हो सकता है। अतः गोवंश की संख्या बढ़ाने के लिए एवम् उनके उत्तम संवर्धन, संगोपान के लिए उपरोक्त उत्पादों का नियमित उपयोग लाभदायक होगा। अप्रत्यक्ष रूप से गोसेवा की पुण्य प्राप्ति भी होगी।

प्रोफ़ेसर अनु पाडे

गोमाता के सम्मान को पुनर्स्थापित करने के लिए शहरों में आवासीय कॉलोनी के पास गौशालाओं का निर्माण आवश्यक

आज भारत में कई पशु अधिकार कार्यकर्ता गायों की पीड़ा और दुख को समाप्त करने के उपाय के रूप में Veganism की वकालत करते हैं। Veganism एक पश्चिमी अवधारणा है जो पशु उत्पादों के उपयोग और पशु स्रोत खाद्य पदार्थों के सेवन से परहेज की वकालत करता है। इस प्रकार, यह मनुष्यों के लिए गाय के दूध के सेवन पर प्रतिबंध लगाता है।

शब्द 'Vegan' वर्ष 1944 में डोनाल्ड वाटसन नामक एक ब्रिटिश बढ़ई द्वारा गढ़ा गया था। यह शब्द "Vegetarian" शब्द के पहले तीन और अंतिम दो अक्षरों को लेकर बनाया गया है जिसका मतलब है **शाकाहारी।** भारत शाकाहार का उद्‌गम स्थल रहा है जहाँ आज भी कई लोग इसका अभ्यास करते हैं।

शाकाहार सनातन धर्म में जीवन का तरीका है, जहां भोजन के लिए किसी भी जानवर को नहीं मारा जाता है। हालांकि, यह जानवरों के उपयोग और पशु उत्पादों के उपभोग को बिना मारे या उन्हें नुकसान पहुंचाए प्रतिबंधित नहीं करता है। उदाहरण के लिए हाथी, घोड़े, गधे, खच्चर आदि का उपयोग परिवहन के साधन के रूप में किया जाता रहा है और बैल का उपयोग परिवहन और खेती दोनों के लिए किया जाता रहा है। इसी तरह गाय, भैंस, बकरी आदि के दूध का उपयोग मानव उपभोग के लिए किया जाता रहा है। इसी तरह भेड़, याक आदि के ऊन का उपयोग गर्म कपड़े बनाने के लिए किया जाता रहा है।

सनातन धर्म में हर देवी—देवता को किसी—न—किसी प्राणी से जोड़ा गया है। बैल को शिव, गाय को कृष्ण, बाघ को दुर्गा, चूहे को गणेश, मोर को कार्तिकेय, कुत्ते को भैरव, कौए को शनि आदि से जोड़ा गया है। इसलिए जानवरों के साथ रहना देवताओं का आशीर्वाद लेने जैसा है और उन्हें मारना या उन्हें नुकसान पहुंचाना देवताओं के क्रोध को झेलने जैसा है। प्राणियों को परिवार का सदस्य माना जाता है जिनके साथ दया और प्रेम से पेश आया जाता है।

हालांकि, अन्य प्राणियों की तुलना में गाय का सनातन धर्म में विशेष स्थान है। बहुसंख्यक लोग उसकी पूजा और सम्मान करते हैं। ऐसा कहा जाता है कि गाय में 33 कोटि देवी—देवता वास करते हैं। दुर्भाग्य से भारत में मुस्लिम और ब्रिटिश आक्रमण के बाद प्राणियों की स्थिति खराब हो गई। उन्हें अब परिवार के सदस्य की तरह नहीं बल्कि एक वस्तु की तरह माना जाने

लगा और उनके साथ दुर्व्यवहार होने लगा। यहां तक कि भोजन के लिए उन्हें मार दिया जाता था। शाकाहार की जगह मांसाहार ने ले ली। गायों की स्थिति भी खराब हो गई। श्रद्धा के पात्र को अब भारत के कई हिस्सों में मारकर खाया जाने लगा। परिणामस्वरूप एक समृद्ध और अमीर देश से भारत गरीब और पिछड़ा हो गया। गाय की स्थिति में गिरावट के साथ भारत की स्थिति भी गिरावट आ गई।

भारत को 1947 में आजादी मिली, लेकिन प्राणियों के प्रति नकारात्मक मानसिकता जारी रही और दुर्भाग्य से अभी भी जारी है। भारत के कई हिस्सों में आज भी अज्ञानतावश गायों को मारकर खाया जाता है। खासकार कुछ पूर्वोत्तर राज्यों और दक्षिणी राज्य केरल में गाय का मांस खाया जाता है।

वैसे तो भारत में गाय को खुलेआम नहीं मारा जाता और न ही खाया जाता है, लेकिन भारत के ज्यादातर हिस्सों में उसकी हालत दयनीय है। उसे अवैध रूप से पकड़ा जाता है और मांस के लिए काटा जाता है। अवैध गोमांस बाज़ार चल रहे हैं और गायों को अवैध रूप से बांग्लादेश जैसे देशों में सीमा पार से ले जाया जाता है।

जिन गायों को मारा नहीं जाता बल्कि दूध के लिए इस्तेमाल किया जाता है, उनकी हालत भी कुछ ठीक नहीं। खास तौर पर महानगरों में उनकी हालत बहुत खराब है। उनके लिए कोई गौचर भूमि नहीं है, इसलिए गायों को सड़कों पर चलने और बैठने के लिए मजबूर होना पड़ता है, जहाँ वे दुर्घटना का शिकार हो जाती हैं। सख्त नियम–कानून न होने के कारण गौपालक (गाय का मालिक) गायों का दूध के लिए उनका शोषण करता है। वह गायों को गर्भवती करने के लिए कृत्रिम गर्भाधान जैसे अनुचित तरीकों का इस्तेमाल करता है और उनसे दूध निकालने के लिए ऑक्सीटोसिन का इंजेक्शन लगाता है। नर बछड़ों की स्थिति और भी खराब है। वे अकसर जन्म के तुरंत बाद अवैध बूचड़खानों में पहुँच जाते हैं या अगर बच गये तो सड़कों पर भटकने के लिए छोड़ दिए जाते हैं, जहाँ वे दुर्घटना या क्रूरता का शिकार हो जाते हैं। नीचे कुछ घटनाएँ दी गई हैं जो हाल ही में महानगरों जैसे दिल्ली, गुरुग्राम, और नोएडा में घटित हुई हैं। ऐसे क्रूर और अमानवीय घाटनाएं रोज गोमाता और नंदी बाबा के साथ शहर में होती हैं जो कि एक सच्चे सनातनी के लिए बहुत अपमानजनक और असहनीय हैं।

1 सितंबर 2024 को पूर्वी दिल्ली में सड़क पर एक छोटे बछड़े को वाहन ने टक्कर मार दी जिससे उसकी टांग टूट गई

भारत को आजादी मिले 78 साल हो गए लेकिन हम भारतीय गोमाता को वह सम्मान और प्यार वापस देने में असफल रहे हैं जो मुगल और ब्रिटिश आक्रमण से पहले गोमाता को प्राप्त था। वह केवल नाम की माता है अब। गोमाता की उपेक्षा और उनकी दयनीय स्थिति का एक मुख्य कारण हमारे नीति निर्माताओं द्वारा बनाई गई दोषपूर्ण नीतियां हैं जो

14 जनवरी 2025 को गुरुग्राम की सड़कों पर एक गर्भवती गाय का गर्भपात हो गया

17 जनवरी 2025 को नोएडा में एक बैल पर तेजाब फेंका गया

कि बड़े पैमाने पर पश्चिमी देशों से प्रभावित हैं। उदाहरण के लिए डेयरी फार्म।

आवासीय कॉलोनियों से दूर डेयरी फार्मों ने गायों पर कहर बरपाया है। ये फार्म केवल गाय के दूध में रुचि रखते हैं क्योंकि इससे उन्हें मौद्रिक लाभ होता है। इसलिए, उससे बड़ी मात्रा में दूध निकालने के लिए अमानवीय और अनैतिक तरीकों का उपयोग किया जाता है।

दूसरा उदाहरण "Veganism" है। गायों के प्रति क्रूरता को रोकने के लिए भारत में कई पशु कार्यकर्ता Veganism का समर्थन करते हैं। उनके अनुसार अगर लोग गाय का दूध पीना बंद कर दें तो गायों की स्थिति में सुधार होगा। Veganism पश्चिम से उधार लिया गया एक विचार है। पश्चिमी देशों में गायों की न तो पूजा की जाती है और न ही उन्हें पवित्र माना जाता है। उन्हें कोई विशेष दर्जा प्राप्त नहीं है जो हमारी गायों को प्राप्त है। पश्चिमी देशों में जानवर सिर्फ़ एक वस्तु है जिसका उपयोग मानव उपभोग के लिए किया जाता है। गाय और भैंसों को डेयरी फार्मों में रखा जाता है जहाँ उनका उपयोग उनके दूध और मांस के लिए किया जाता है। इन देशों में गाय, बकरी और मुर्गी में कोई अंतर नहीं किया जाता। सभी का उपयोग मानव उपभोग के लिए किया जाता है। पश्चिम में बहुसंख्यक लोगों के लिए मांसाहार जीवन का एक तरीका है। इसलिए Veganism को पशु क्रूरता को रोकने के समाधान के रूप में देखा जाता है। यह लोगों को किसी भी पशु उत्पाद (दूध और मांस दोनों) का सेवन न करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

क्या डेयरी फार्म बनाने और Veganism (दूध रहित) आहार अपनाने से गायों की समस्या और भारत में उनके साथ रोज़ाना होने वाली क्रूरता का समाधान हो जाएगा? इसका जवाब है नहीं। भारत में मिलियन डॉलर का डेयरी उद्योग है जिस पर हज़ारों भारतीय परिवारों की आजीविका निर्भर करती है। इसलिए डेयरी उद्योग को बंद करना कोई व्यावहारिक समाधान नहीं है। बल्कि डेयरी उद्योग को बंद करने का मतलब है बड़ी संख्या में गायों को छोड़ देना जो अंततः बूचड़खानों या गौशालाओं में चली जाएँगी और जो अपने जीवनयापन के लिए सरकारी धन और दान पर निर्भर होते हैं। हमने देखा है कि कैसे बैलों को छोड़ दिया जाता है और नर बछड़ों को जन्म के तुरंत बाद मरने के लिए मजबूर किया जाता है, क्योंकि वे बेकार हैं और आधुनिक भारत में किसी काम के नहीं हैं। इसलिए Veganism का मतलब गायों को भी बैलों की तरह बेकार बना देना, ताकि हमारी गायें कभी बेकार न हों और उनकी अच्छी तरह से देखभाल

की जा सके, इसलिए भारतीय नीति निर्माताओं को पश्चिम की नकल करना बंद करना होगा और अपनी खुद की नीतियां बनानी होंगीं, जो भारतीय परंपरा और संस्कृति पर आधारित हों। ये कुछ तरीके हैं जिनसे हम गायों के साथ अपनी सदियों पुरानी परंपरा को बहाल कर सकते हैं।

1. महानगरों में आवासीय कॉलोनियों के पास गौशालाएँ बनाएँ, जिनका प्रबंधन निवासियों (गौसेवकों), गाय मालिकों (गौपालकों) और सरकार द्वारा सामूहिक रूप से किया जाए। गायों के कल्याण के लिए गौशालाओं के संचालन में निवासियों (गौसेवकों) की भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है। इससे सरकारी गौशालाओं और कई निजी गौशालाओं में भ्रष्टाचार बंद हो जाएगा, जिनका एकमात्र उद्देश्य दान के माध्यम से पैसा कमाना है, न कि गायों का कल्याण करना। इससे सरकार पर वित्तीय बोझ भी बहुत कम होगा और गोमाता की पूजा करने की हमारी परंपरा को फिर से स्थापित किया जा सकेगा, जिसे आज की पीढ़ी भूल चुकी है। कई भारतीयों के लिए गाय सिर्फ दूध देने वाला प्राणी है। यह महत्वपूर्ण है कि हमारे बच्चे गाय के साथ बातचीत करें और उसका मूल्य और मानव कल्याण में उसका महत्व जानें और यह तभी संभव है जब गाय और बैल हमारी आवासीय कॉलोनियों के पास रहें, न कि डेयरी फार्मों या नगर निगम की गौशालाओं में, जो आवासीय कॉलोनियों से बहुत दूर होते हैं।

2. शहरों में लोगों को गाय पालने और उन्हें अपने घरों में रखने के लिए प्रोत्साहित करें। जैसे कुत्तों को पालतू जानवर के रूप में रखा जाता है, वैसे ही भारतीयों को अपने घरों में गोवंश को पालतू प्राणी के रूप में रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जैसे हमारे प्रधानमंत्री मोदीजी ने अपने पीएम बंगले में एक गाय और उसके बछड़े को रखा है। आवासीय सोसाइटियों और अपार्टमेंटों को भी अपने आस–पास/परिसर में कम–से–कम एक से दो गाय या बैल रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

3. संस्थानों/संगठनों को अपने आस–पास कुछ बूढ़ी और परित्यक्त गायों को रखने के लिए प्रोत्साहित करें। उदाहरण के लिए होटल, स्कूल, कॉलेज, मंदिर, रेलवे स्टेशन, मेट्रो स्टेशन, हवाई अड्डे, सरकारी कार्यालय आदि।

4. गायपालकों के लिए सख्त दिशा–निर्देश और कानून बनाएं ताकि वे गाय का दूध निकालने के लिए किसी भी अनुचित तरीके का इस्तेमाल न करें। भैंसों के लिए भी यही किया जाना चाहिए। हम किसी भी प्राणी का दूध के लिए शोषण क्यों करें?

5. गाय का जैविक (Organic) दूध बाजार में बेचा जाना चाहिए, जिसका मतलब है कि गायों का शोषण किए बिना या अनुचित तरीकों का इस्तेमाल किए बिना उनसे निकाला गया दूध। इसलिए Veganism के बजाय भारत को जैविक (Organic) दूध की वकालत करनी चाहिए

6. साथ ही नारियल और सोया दूध की तरह पौधे आधारित दूध को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि गाय पर दूध के लिए अधिक बोझ न पड़े और उसका शोषण न हो सके। इससे पौधे आधारित दूध (Vegan Milk) के निर्यात से भारी राजस्व प्राप्त करने में भी मदद मिलेगी, जिसकी पश्चिमी देशों में भारी मांग है।

7. खेती में बैलों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए और शहरों के बाहरी इलाकों में माल और लोगों को ले जाने के लिए परिवहन के साधन के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए ताकि उन्हें छोड़ा न जाए।

33 कोटि देवी–देवता जो गोमाता में निवास करते हैं उनके आशीर्वाद के बिना भारत कैसे गौरवशाली बन सकता है? और वो तभी संभव है जब हम रिहायशी इलाकों में गौशाला का निर्माण कराएं और गोपालकों के लिए सख्त कानून लाएं।

स्वस्थ जीवन के लिए अपनाएँ गोवंश आधारित जैविक खेती

सम्पूर्ण विश्व में बढ़ती हुई जनसंख्या एक गंभीर समस्या है, बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ भोजन की आपूर्ति के लिए मानव द्वारा खाद्य उत्पादन की होड़ में अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए तरह–तरह की रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों का उपयोग, प्रकृति के जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान–प्रदान के चक्र को (इकोलॉजी सिस्टम) प्रभावित करता है, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति खराब हो जाती है, साथ ही वातावरण प्रदूषित होता है तथा मनुष्य के स्वास्थ्य में गिरावट आती है।

प्राचीन काल में मानव स्वास्थ्य के अनुकुल तथा प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप खेती की जाती थी, जिससे जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान–प्रदान का चक्र निरन्तर चलता रहा था, जिसके फलस्वरूप जल, भूमि, वायु तथा वातावरण प्रदूषित नहीं होता था। भारत वर्ष में प्राचीन काल से कृषि के साथ–साथ गौ पालन किया जाता था, जिसके प्रमाण हमारे ग्रांथों में प्रभु कृष्ण और बलराम हैं जिन्हें हम गोपाल एवं हलधर के नाम से संबोधित करते हैं अर्थात कृषि एवं गोपालन संयुक्त रूप से अत्याधिक लाभदायी था, जोकि प्राणी मात्र व वातावरण के लिए अत्यन्त उपयोगी था । परन्तु बदलते परिवेश में गोपालन धीरे–धीरे कम हो गया तथा कृषि में तरह–तरह की रसायनिक खादों व कीटनाशकों का प्रयोग हो रहा है, जिसके फलस्वरूप जैविक और अजैविक पदार्थो के चक्र का संतुलन बिगड़ता जा रहा है, और वातावरण प्रदूषित होकर, मानव जाति के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। अब हम रसायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर, जैविक खादों एवं दवाइयों का उपयोग कर, अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं जिससे भूमि, जल एवं वातावरण शुद्ध रहेगा और मनुष्य एवं प्रत्येक जीवधारी स्वस्थ रहेंगे।

भारत वर्ष में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है और कृषकों की मुख्य आय का साधन खेती है। हरित क्रांति के समय से बढ़ती हुई जनसंख्या को देखते हुए एवं आय की दृष्टि से उत्पादन बढ़ाना आवश्यक है। अधिक उत्पादन के लिये खेती में अधिक मात्रा में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशक का उपयोग करना पड़ता है जिससे सीमान्त व छोटे उपयोग करना पड़ता है जिससे सीमान्त व छोटे कृषक के पास कम जोत में अत्यधिक लागत लग रही है और जल, भूमि, वायु और वातावरण भी प्रदूषित हो रहा है साथ ही खाद्य पदार्थ भी जहरीले हो रहे हैं। इसलिए इस प्रकार की उपरोक्त सभी समस्याओं से निपटने के लिये गत वर्षो से निरन्तर टिकाऊ खेती के सिध्दान्त पर खेती करने की सिफारिश की गई, जिसे प्रदेश के कृषि विभाग ने इस विशेष प्रकार की खेती को अपनाने के लिए, बढ़ावा दिया जिसे हम 'जैविक खेती' के नाम से जानते हैं। भारत सरकार भी इस खेती को अपनाने के लिए प्रचार–प्रसार कर रही है।

जैविक खेती से लाभ

भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती है। सिंचाई अंतराल में वृद्धि होती है। रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से कृषि लागत में कमी आती है। फसलों की उत्पादकता में वृद्धि। जैविक खाद के उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है। भूमि की जल धारण क्षमता बढ़ती हैं। भूमि से पानी का वाष्पीकरण कम होगा। भूमि के जल स्तर में वृद्धि होती हैं। मिट्टी खाद पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण में कमी आती है। कचरे का उपयोग, खाद बनाने में होने से बीमारियों में कमी आती है। फसल उत्पादन की लागत में कमी एवं आय में वृद्धि अंतरराष्ट्रीय बाजार की स्पर्धा में जैविक उत्पाद की गुणवत्ता का खरा उतरना।

जैविक खेती, की विधि रासायनिक खेती की विधि की तुलना में बराबर या अधिक उत्पादन देती है अर्थात जैविक खेती उर्वरता एवं कृषकों की उत्पादकता बढ़ाने में की मृदा पूर्णतः सहायक है। वर्षा आधारित क्षेत्रों में जैविक खेती की विधि और भी अधिक लाभदायक है। जैविक विधि द्वारा खेती करने से उत्पादन की लागत तो कम होती ही है इसके होती है तथा अंतराष्ट्रीय बाजार की स्पर्धा में साथ ही कृषक भाइयों को आय अधिक प्राप्त जैविक उत्पाद अधिक खरे उतरते हैं। जिसके फलस्वरूप सामान्य उत्पादन की अपेक्षा में कृषक भाई अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आधुनिक समय में निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या, पर्यावरण प्रदूषण, भूमि की उर्वरा शक्ति का संरक्षण एवं मानव स्वास्थ्य के लिए जैविक खेती की राह अत्यन्त लाभदायक है। मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए नितान्त आवश्यक है कि प्राकृतिक संसाधन प्रदूषित न हों, शुद्ध वातावरण रहे एवं पौष्टिक आहार मिलता रहे, इसके लिये हमें जैविक खेती की कृषि पद्धतियाँ को अपनाना होगा जोकि हमारे नैसर्गिक संसाधनों एवं मानवीय पर्यावरण को प्रदूषित किये बगैर समस्त जनमानस को खाद्य सामग्री उपलब्ध करा सकेगी तथा हमें खुशहाल जीने की राह दिखा सकेगी।

गोशालाएं बनवाकर सरकार ने दुर्गंध फैलाई: अखिलेश

कन्नौज (यूपी)। समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव के सुगंध और दुर्गंध वाले बयान पर सियासी बखेड़ा हो गया। गत माह उन्होंने यहां कहा था कि कन्नौज में सुगंध का विशेष महत्व है। सपा को सुगंध पसंद है, इसलिए इत्र पार्क बनवाया। इस सरकार को दुर्गंध पसंद है, इसलिए गोशालाएं बनवाई।

के.के. इंटर कॉलेज परिसर में चल रहे 1108 कुंडीय मृत्युंजय मां पीतांबरा महायज्ञ में शामिल होने पहुंचे पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने यज्ञ में पुष्प की आहुतियां दीं और यज्ञाधीश, रामदास जी महाराज से आशीर्वाद लिया।

उन्होंने सपा सांसद रामजी लाल सुमन को लेकर भी भाजपा पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा

कि भाजपा झूठ का एक्सप्रेस–वे है। भ्रष्टाचार के पैसे पर एकाधिकार के लिए भाजपा के अंदर एक हाई–वे बनाया जा रहा है, जो लखनऊ से गोरखपुर जाता है।

साभार – हिन्दुस्तान

ग्वाला का बेटा अपनी जड़ों से कट गया: केशव

लखनऊ। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव के बयान पर पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि अगर ग्वाला के बेटे को गाय के गोबर से दुर्गंध आने लगे तो समझना चाहिए कि वह अपनी जड़ों और समाज से पूरी तरह कट चुका है। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने लिखा था कि किसान के बेटे को अगर गोबर से दुर्गंध आने लगे तो अकाल तय है। सपा बहादुर अखिलेश यादव को भी गोबर' से दुर्गंध आ रही है, उनकी पार्टी का **समाप्तवादी पार्टी में तब्दील होना तय है।**

पात्रा बोले– ऐसे लोग राजनीति बंद' कर दें : भाजपा सांसद संबित पात्रा ने एक्स पर अखिलेश के बयान पर लिखा, ये सभी पार्टियां सनातन के विरोध में आवाज उठाती रहती हैं। अगर देश में रहकर कोई सनातन का विरोध करता है, तो उसे देश में राजनीति बंद कर देनी चाहिए।

साभार – हिन्दुस्तान

मां का दूध नहीं पीने वाले बच्चे मोटापे के शिकार

लखनऊ। स्तनपान से वंचित बच्चे मोटापे के शिकार हो सकते हैं, जबकि स्तनपान करने वाले ज्यादातर बच्चों का वजन सामान्य रहता है। यह तथ्य लखनऊ की प्रतिष्ठित किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी (केजीएमयू) के बाल रोग विभाग में ओपीडी मरीजों से जुटाए गए आंकड़ों में सामने आए हैं। बाल रोग विभाग की ओपीडी में 200 बच्चों के आंकड़े जुटाए गए। ये बच्चे विभिन्न बीमारियों की वजह से ओपीडी में आए थे। दो से तीन साल तक के इन बच्चों को दो श्रेणियों में बांटा गया। 100 बच्चे जिन्होंने छह माह तक स्तनपान किया। बाकी 100 बच्चों ने स्तनपान नहीं किया। सभी बच्चों के वजन की माप कराई गई। डिब्बाबंद दूध पीने वाले बच्चों का वजन सामान्य से अधिक पाया गया।

— रजनीश रस्तोगी

गोभक्त संत अशर्फी दास जी का स्वर्गवास

गोभक्त पूज्य संत श्री अशर्फी दास जी महाराज विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय मार्गदर्शक मंडल के सदस्य का गत 24 मार्च 2025 को सुबह 4:00 बजे पटना से दिल्ली इलाज के दौरान सिवान में पहुंचते ही स्वर्गवास हो गया। वे राम जन्मभूमि आंदोलन से संगठन में जुड़े रहे और उत्तर बिहार प्रांत के गोरक्षा प्रमुख भी रहे हैं। वह सुपौल जिला में लौकहा के थे। वे संतों के बीच काफी लोकप्रिय थे।

हरि कैलाश जी पंचतत्व में विलीन

पंजाब प्रांत गोरक्षा प्रमुख नवनीत शर्मा जी के पूजनीय पिता जी श्रीमान हरि कैलाश शर्मा जी का गत 25 मार्च, 2025 को देहांत हो गया।

दिवंगत आत्माओं को गोमाता अपने श्रीचरणों में स्थान दें। गोरक्षा विभाग, विहिप की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

— सम्पादक

ईसाई संगठन अब देश में चलाएगा गोधन रक्षण एवं संरक्षण जैसी मुहिम

रायपुर। ईसाई संगठन द्वारा सौहार्द्रपूर्ण संबंध स्थापित करने की छत्तीसगढ़ से शुरू मुहिम अब देशभर में चलेगी। द चर्च आफ नार्थ इंडिया (सीएनआइ) के निदेशक जनसंपर्क प्रांजय मसीह ने बताया कि पिछले वर्ष शुरू हुई गोधन रक्षण एवं संरक्षण जैसी पहल को अन्य राज्यों में ले जाने के प्रयास हो रहे हैं। मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश समेत अन्य राज्यों में चर्च की जमीनों पर गोशालायें स्थापित करने की योजना पर काम हो रहा है। इससे पहले सहायक प्राध्यापक रहे मो. फैज खान ने भी गायों की रक्षा का संकल्प लिया था। वह 2012 में नौकरी छोड़ अभियान से जुड़े थे।

छत्तीसगढ़ डायोसिस के सचिव नितिन लारेंस ने बताया कि बलौदा बाजार जिले में 22 से 24 मार्च तक गोहत्या रोकने के लिए जनजागरण सभा व 50 किमी की दंडवत यात्रा निकाली गई थी। हिंदू संगठन भी आयोजन में सहभागी थे। डायोसिस विभिन्न राष्ट्रसेवा गतिविधियों में भी योगदान दे रहा है। बलौदा बाजार के विश्रामपुर स्थित चर्च में समाज के प्रांतीय अधिकारियों द्वारा सद्भावना सभा आयोजित की गई थी। प्रदेश में गौरेला पेंड्रा मरवाही, बलौदा बाजार में गोशाला की स्थापना की तैयारी शुरू है। आरएसएस के साथ संग जनसेवा कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जा रहा है।

साभार : नई दुनियां

दिल्ली की सीएम को लिखेंगे पत्रः प्रांजय ने बताया कि दिल्ली से सटे हरियाणा के इलाके में गोशाला के लिए जमीन देखी जा रही है। दिल्ली में गोशाला के संचालन में दिल्ली सरकार से सहयोग के लिए सीएम रेखा गुप्ता जी को पत्र लिखा जाएगा। उन्होंने बताया कि प्रभु मसीह का जन्म गोशाला में ही हुआ था। गाय ईसाइयों के लिए भी मां समान है।

–दैनिक जागरण

जैविक सब्जियाँ उगा सोनू ने बनाई पहचान

अल्मोड़ा : जिले के कुटगोली तोक के दमुवाकनेली गांव निवासी सोनू बिष्ट विरासत में मिली 100 नाली जमीन में लगन और मेहनत से आधुनिक तकनीक से सब्जी की खेती कर रहे हैं। वह अपने चार परिजनों सहित गांव के कई लोगों को रोजगार भी दे रहे हैं।

सोनू ने 12वीं तक पढ़ाई करने के बाद परिवार की जिम्मेदारी उठाने के लिए सब्जियां उगानी शुरू कीं। उन्होंने मात्र 16 साल की उम्र में स्थानीय छोटे बाजार कोसी और हवालबाग आदि जगहों में 8 से 10 किमी तक पैदल चलकर सब्जी बेचने का काम किया। वहां उन्हें मेहनत कर आमदनी का अनुभव मिला। तब उन्हें खेती और उपज बेचने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। इसलिए सोनू ने राह बदली।

फिर उन्होंने अपने गांव से जिला मुख्यालय अल्मोड़ा बाजार का सफर तय किया लेकिन शुरुआती दौर उनके लिए बहुत मुश्किल भरा था। वह लगातार बेहतरी का प्रयास करते रहे। समय मेहनत करने वालों पर हमेशा मेहरबान रहता है। इसलिए धीरे–धीरे उनका सब्जी का कारोबार बढ़ता गया। अब सोनू सालाना चार लाख रुपये से अधिक कमा रहे हैं।

उगाते हैं जैविक सब्जियां : सोनू ने अपने खेतों पर कई तरह की जैविक (गोवंश आधारित) सब्जियां उगाई हैं। इनमें तुरई, चिचन, कद्दू, बैगन, लौकी, टमाटर, आलू आदि सब्जियां प्रमुख हैं। इसका जायका इनकी सब्जियों में मिलता है। जहां गांवों में बंदरों और सुअरों का आतंक बढ़ने से किसान काफी परेशान हैं। वहीं सोनू ने जैविक सब्जियां उगाकर ये सिद्ध किया है कि लगन व परिश्रम से काम करने से सफलता जरूर मिलती है।

Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

URBANIZATION AND COW CONSERVATION

CHALLENGES OF TRADITIONAL LIVESTOCK MANAGEMENT

Urbanization, the rapid expansion of cities and towns, poses significant challenges to traditional cattle-rearing practices and the broader objective of cow conservation. As rural areas transform into urban centers, the delicate balance between modern development and the preservation of cultural and ecological heritage such as traditional livestock management, becomes increasingly strained.

One of the foremost challenges of urbanization is the diminishing availability of land for grazing and cattle shelter. Traditional cattle-rearing practices rely heavily on open spaces and pastures, which are increasingly replaced by concrete jungles. This lack of space not only limits the rearing of indigenous breeds but also leads to the fragmentation of livestock habitats, making it challenging for small-scale farmers to sustain their herds.

Moreover, the economic pressures associated with urban living force many families to abandon livestock management in favor of other income-generating activities. The high cost of land and housing in urban areas makes it impractical to allocate resources for cattle rearing. Additionally, legal restrictions and zoning laws in cities often prohibit livestock farming, further discouraging traditional practices.

The shift in societal attitudes towards livestock in urbanized regions also contributes to the decline. As cities evolve, the cultural and economic significance of cows often diminishes, leading to a lack of awareness and appreciation for their conservation. This is particularly detrimental to indigenous breeds, which are better adapted to local climates and ecosystems but are gradually replaced by exotic breeds due to economic pressures and perceived productivity benefits.

Despite these challenges, the applications of cow by-products, such as urine and dung, offer promising pathways to integrate

traditional practices into modern urban settings. Cow urine and dung have long been used in traditional medicine, agriculture and energy production and their relevance is now being re-examined in light of sustainability goals.

Cow urine, a cornerstone of Ayurveda medicine, is believed to possess antibacterial, antifungal and detoxifying properties. Research suggests that cow urine can enhance immune function and provide therapeutic benefits for ailments ranging from skin disorders to chronic diseases. Urban practitioners and startups are exploring ways to commercialize cow urine-based health products, including tonics, soaps and ointments. Such innovations not only revive traditional knowledge but also create economic opportunities that support cow conservation.

Cow dung, often referred to as "black gold" in traditional farming, remains a vital component of organic agriculture. It serves as an excellent natural fertilizer, enriching soil with essential nutrients and improving its texture. In urbanized settings, the demand for organic produce is rising, creating opportunities for the use of cow dung in urban farming and rooftop gardening initiatives. Vermicomposting, a process that converts cow dung into nutrient-rich compost using earthworms, is gaining popularity as an eco-friendly waste management solution.

Additionally, cow dung is utilized in the production of bio-pesticides, which are safer alternatives to chemical pesticides. These bio-pesticides not only protect crops but also contribute to environmental health by reducing soil and water contamination. In urban contexts, such practices can be integrated into community gardens and urban farms, promoting sustainable agriculture.

The energy potential of cow dung is another significant avenue for its application. Biogas production, a process that converts cow dung into methane gas, offers a renewable energy source that can be harnessed in urban and peri-urban areas. Biogas plants not only reduce reliance on fossil fuels but also provide a sustainable waste disposal mechanism. In densely populated urban areas, small-scale biogas units can be installed to manage organic waste effectively while generating clean energy.

Bridging the Gap: Integrating Traditional Practices into Urban Settings

To address the challenges posed by urbanization, innovative approaches are required to integrate traditional livestock management practices into modern urban contexts. One potential solution is the establishment of urban livestock parks or community cattle shelters, where cows can be reared collectively by multiple families or cooperatives. These spaces can also serve as educational centers to raise awareness about the cultural and ecological importance of cow conservation.

Policy support is crucial for such initiatives. Governments and municipal authorities can implement urban planning frameworks that allocate space for livestock management and support urban farming. Financial incentives, such as subsidies for organic farming and biogas production, can further encourage the adoption of sustainable practices involving cow by-products.

Public-private partnerships can play a pivotal role in promoting the commercial potential of cow urine and dung-based products. By collaborating with researchers, entrepreneurs and community organizations, these partnerships can help scale up production, distribution and marketing efforts, ensuring the economic viability of such ventures.

Urbanization presents significant challenges to the conservation of cows and the continuation of traditional livestock management practices. However, by leveraging the applications of cow urine and dung in alternative medicine, organic farming and renewable energy, it is possible to integrate these age-old practices into modern urban frameworks. With innovative approaches, supportive policies and community engagement, the co-existence of urban development and cow conservation can become a reality, ensuring the preservation of ecological and cultural heritage for future generations.

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं –

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली

खाता नम्बर – 04072010038910 IFSC CODE : PUNB0040710

नोट – शुल्क "भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद" के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011.26174732

pnb punjab national bank

...the name you can BANK upon!

अब आप यूपीआई के माध्यम से भी पत्रिका का शुल्क जमा कर सकते हैं

SCAN & PAY USING ANY BHIM UPI APP

9958710672m@pnb

MERCHANT: BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD

BHIM | UPI

BHARAT INTERFACE FOR MONEY | UNIFIED PAYMENTS INTERFACE

BIRTH OF NEWBORN CALF CELEBRATED

A grand celebration was held on March 11, 2025, at a stadium in Taranalli village, Sedam taluka, Kalaburagi division, Karnataka, to mark the birth of a newborn calf (vatsa) at Navanit Goshala. The event drew an attendance of over 1,500 people, predominantly comprising ladies and Swamijis.Channabaswanth Reddy, the Uttar Pradesh Gauseva Sangh Sanyojak, delivered a keynote address highlighting the significance of Gomata (cows) in our daily lives and agriculture. The function showcased the importance of cows in our ecosystem and their role in sustainable farming practices.

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 अप्रैल, 2025

परम गोभक्त-प्रचारक धर्मनारायण जी का गोलोकवास

परम गोभक्त और संघ के वरिष्ठ प्रचारक तथा विश्व हिन्दू परिषद की केंद्रीय प्रबंध समिति के सदस्य मा. धर्म नारायण शर्मा जी का हृदय रोग की लंबी बीमारी के बाद गत 21 मार्च 2025 को रात्रि में 8.40 बजे परिषद के केंद्रीय कार्यालय, संकट मोचन आश्रम, नई दिल्ली में स्वर्गवास हो गया। वे 86 वर्ष के थे। वह प्रतिदिन सुबह लगभग 04:00 बजे उठते थे। नित्य क्रियाकर्म–स्नान करने के पश्चात **"एकात्मता स्तोत्रम" (प्रातःस्मरण)** कार्यक्रम में सम्मिलित होते थे। तदुपरांत कार्यालय में ही लगने वाली आरएसएस की **शाखा** में पहुंचते थे। शाखा समाप्त होने के तत्काल बाद वे गौशाला पहुंच कर सभी गोमाताओं एवं गोवंश का दर्शन–चरणवन्दन करने के बाद वापस अपने कमरे में पहुंचते थे। प्रत्येक गोपाष्टमी विशेषांक में उनका गाय से सम्बन्धित आलेख अवश्य रहता था। अस्वस्थ रहते हुए भी उन्होंने हाल ही के **गोपाष्टमी विशेषांक** के लिए विशेष आग्रह करने पर आलेख लिख कर दिया था।

20 जून 1940 को राजस्थान के उदयपुर में जन्मे श्रद्धेय धर्म नारायण जी 1959 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बने। वे जयपुर और भीलवाड़ा जिलों में जिला प्रचारक, अजमेर और जोधपुर विभागों के विभाग प्रचारक, 1984 से 1994 तक महाकौशल प्रांत के प्रांत प्रचारक रहने के बाद 1995 से 2000 तक विश्व हिन्दू परिषद में पूर्वांचल के अंचल संगठन मंत्री और बाद में सन् 2000 से दिल्ली में विहिप के केंद्रीय मंत्री रहे। उसके बाद 3 वर्ष एकल अभियान में रहने के बाद वे 2024 तक विहिप के धर्म प्रसार आयाम के केंद्रीय सह प्रमुख भी रहे।

श्रद्धेय धर्म नारायण जी ने वर्तमान हिन्दू समाज की आवश्यकता के अनुसार **हिंदू आचार संहिता** का प्रारूप भी तैयार किया। वे प्रभावी वक्ता और कर्मठ लेखक भी थे। उन्होंने भारतीय धर्म, संस्कृति, ज्ञान–विज्ञान, नारी व युवा सशक्तिकरण जैसे अनेक विषयों पर डेढ़ दर्जन से अधिक पुस्तकें व सैकड़ों लेख लिखे।

उनका अंतिम संस्कार गत माह 22 मार्च (शनिवार) को सायं 4.00 बजे दिल्ली स्थित निगमबोध घाट पर किया गया। इससे पूर्व उनका शरीर विहिप के केंद्रीय कार्यालय में अंतिम दर्शनों के लिए रखा गया। इस महात्मा के महाप्रयाण पर उनकी पावन स्मृति में 01 अप्रैल को भावपूर्ण श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें उपस्थित सभी लोगों ने उनकी दिवंगत आत्मा के प्रति भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

बाल्यकाल से ही आप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शामिल होकर संघ के स्वयंसेवक बन गये। संघ कार्य की जिम्मेदारी वहन करने हेतु 1959 में घर और घरवालों द्वारा विवाह के अतीव आग्रह को नकारकर आपने संघ प्रचारक बनना ही अपने जीवन का ध्येय समझा। संघ की योजनाओं में कार्यरत रहकर आपने अपनी महाविद्यालयीन शिक्षा भी अनवरत जारी रखते हुए बी.ए. तक की पढ़ाई पूर्ण की।

आपके द्वारा अभी तक जो पुस्तकें लिखी गई हैं उनमें से प्रमुख– (1) शाश्वत हिन्दुत्व (2) व्यक्ति से व्यक्तित्व (3) भगवान बलराम जी (4) संस्कृति के उज्ज्वल नक्षत्र (5) राष्ट्रमाता भारत माता की वन्दना (6) ईसाइयत की विकृत कृति (7) धर्मग्रन्थों में रामराज्य (8) अमरयोगी महाराज भर्तृहरि (9) युवाशक्ति मंच (10) नारीशक्ति मंच (11) मा. मोहन जी जोशी की जीवनी (12) लोकदेवता बाबा रामदेव (13) लोक देवता जाहर वीर गोगा (14) लव जिहाद (15) भगवान सूर्य एवं संध्या, खण्ड–1 (16) भगवान सूर्य एवं संध्या, खण्ड–2 (17) भगवान सत्य नारायण नामक जैसी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। — *सम्पादक*

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक